International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 9, September 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

यू.पी. बोर्ड और सी.बी.एस.ई. बोर्ड के स्कूलों में माध्म मक स्तर पर अध्ययरत वद्यार्थीयों के शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. बी. के. गुप्ता, (प्रोफेसर और वभागाध्यक्ष)
दुर्गेश कुमार, शोधार्थी
जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, बाराबंकी (उ.प्र.)

शोध सारांश

जॉन डीवी ने कहा था क जिस तरह भोजन , प्रजनन जै वक जीवन की आवश्यकता है ,उसी तरह शक्षा सामाजिक जीवन की शक्षा के माध्यम से मनुष्य नये वचारों तथा जीवन शै लयों को अपनानेकी को शश करता है । शक्षा से ही वह अपनी बौ द्धक क्षमता तथा ज्ञान को बढ़ाकर प्रकृति को अपनी इच्छा केअनुरूप नियंत्रित करने का प्रयास करता है तथा इस ज्ञान को आने वाली पीढ़ियों को देता है। मानवीय जीवन ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। जिसके दो पहलू हैं- जै वक तथा सामाजिक या सांस्कृतिक । जहाँ भोजन तथा प्रजनन जै वक जीवन को बनाये रखने तथा बढ़ाने के लए आवश्यक हैं , वही शक्षासांस्कृतिक जीवन के लए जीव वज्ञान की दृष्टि से वनस्पतियों तथा जीव दोनों के समान कहे जा सकते हैं , परन्तु सामाजिक या सांस्कृतिक जीवन केवल मनुष्यों में ही पाया जा सकता हैं क्यों क सर्फ मनुष्य में ही श क्षत होने की क्षमता है।

मनुष्य काजीवन सर्फ जै वक ही नहीं वरन् सामाजिक क्रयाओं से नियंत्रित होता है। जहाँ जै वक क्रयाएं अनुवं शकतासे निर्दे शत होती है वहीं शक्षा सामाजिक अनुवं शकता कही जा सकती है। सर्फ जीव अनुवं शकता की दृष्टिसे मनुष्यों तथा पशुओं में कोई फर्क नहीं रह जाएगा अतएव हम कह सकते हैं क यह एक सामाजिक अनुवं शकता है जो उसे सृष्टि को नियंत्रित करने की क्षमता देती है। इस तरह शक्षा एक महत्वपूर्ण जै वक क्रया कही जा सकती है।

प्रस्तुत अध्ययन यूपी बोर्ड और सीबीएससी स्कूलों में माध्म मक स्तर पर अध्ययरत वद्या र्थयों के शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन कया गया है। अध्ययन सर्वेक्षण ववरणात्मक शोध प्र व ध से पूरा कया गया है। अध्ययन में निष्कर्ष के तौर पर पाया गया क यूपी बोर्ड और सीबीएससी स्कूलों में माध्म मक स्तर पर अध्ययरत वद्या र्थयों के शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा के बीच में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

बीज शब्द-सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन, सामाजिक अनुवं शकता, समाजिक क्रयाये,यूपी बोर्ड और सीबीएससी स्कूल आदि।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 9, September 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रस्तावना

व्यक्ति प्रतिदिन अपने जीवन में, अपने घर में, परिवार में, समाज में तथा आसपास के लोगों मेंउपलब्धियों को पाते हुए देखता है और उनके सुखी एवं समृ द्ध से परिपूर्ण वातावरण से कुछ न कुछ सीखलेता है और यह सीख उसको अपने खुद की उपलब्धि के लए उसे प्रेरित करती है। जिसे हम अ भप्रेरणाकहते हैं। बालक पढ़ाई के दौरान जब अपने आसपास के लोगों को पढ़ाई में सफल होते हुए देखता है तो वहस्वयं को भी उसके समान बनाने की को शश करता है और इसके लए वह व भन्न प्रकार के गति व धयों वप्रयासों को करता रहता है। व्यक्ति यह सब शक्षा से सम्बन्धित गति व धयों को शै क्षक अ भप्रेरणा के द्वारा हीकर पाता है। जिसे हम शै क्षक अ भप्रेरणा कहते हैं। यह अ भप्रेरणा उसके मस्तिष्क में इतना बल प्रदान करतीहै क वह अपने शैक्ष णक कार्यों को और अ धक परिश्रम , लगन व तन्मयता के साथ करने की शक्ति प्राप्त करलेता है।

मनुष्यों में अ भप्रेरक तत्वों भूख, प्यास, काम,नींद, वश्राम आदि जन्मजात अ भप्रेरक पाए जाते हैं।इनके अभाव में मानव जीव की कल्पना नहीं की जा सकती है। मनुष्य अपने बौ द्धक क्षमता के सहारे कुछअ भप्रेरक तत्व जैसे अ भरु च, आनन्द, जीवन लक्ष्य आदि व्यक्तिगत तो सामुदायिकता, स्वाग्रह, युद्ध, प्रेम आदिसामाजिक अ भप्रेरक तत्वों की खोज कया है। माध्य मक स्तर तक के वद्या र्थयों में अर्जित अ भप्रेरक तत्वों का वकास आवश्यक होता है। ऐसे अ भप्रेरक तत्वों से संवेगात्मक बु द्ध सही दिशा प्राप्त करती है।

परिवार बच्चोंका प्रथम पाठशाला होता है , एवं माँ उनकी प्रथम श क्षका होती है। अतः परिवार एवं माँ का शै क्षक अ भप्रेरणापर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार प्रभाव डालता है।

पूर्व साहित्य का अध्ययन

मौला, जे.एम. (2010) नेअध्ययन में इं गत कया क वद्या र्थयों के गृह वातावरण के छः पहलू जिसमें पता के व्यवसाय, माता के व्यवसाय, पता के शै क्षक योग्यता, माता के शै क्षक योग्यता, पारिवारिक आकार एवं माता द्वारा घर में शक्षा के लए छूटका शै क्षक उपलब्धि के मध्य सार्थक एवं धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

चौहान एवं खान (2010) ने अध्ययनमें पाया क वद्या र्थयों के शै क्षक उपलब्धि पर अ भभावक समर्थन के पहलू में गृह वर्क एवं शै क्षक क्रयाकलापका सार्थक प्रभाव पड़ता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 9, September 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अलथाफ लण्डे एण्ड मासन (2007) ने अध्ययन में पाया क जिन कक्षाओं का वातावरण अच्छा एवं अध्यापकों का छात्रों के प्रति दृष्टिकोण अच्छाथा उस कक्षा के छात्रों की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा अन्य कक्षाओं के छात्रों की अपेक्षा अ धक थी।

शोध का मूल समस्या कथन

यूपी बोर्ड और सीबीएससी स्कूलों में माध्म मक स्तर पर अध्ययरत वद्या र्थयों के शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के निम्न उद्देश्य निर्धारित कये गये।

1-यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत वद्या र्थयों की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2-यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3-यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनायें

प्रस्तुत अध्ययन में निम्न ल खत परिकल्पनाओं को निर्धारित कया गया।

1-यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत वद्या र्थयों की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा मेंकोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2-यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा मेंकोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3-यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा मेंकोई सार्थक अन्तर नहीं है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 9, September 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शोध प्र व ध

प्रस्तुत शोध अध्ययन सर्वेक्षण ववणात्मक शोध प्र व ध से पूरा कया गया है।

शोध की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या के रूप में उत्तरप्रदेश के बाराबंकी के माध्य मक वद्यालयों के कक्षा-10 में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं को जनसंख्या के रूप में निर्धारित कया गया है।

न्यादर्श का निर्धारण

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में बारांबकी के 4 यूपी बोर्ड के माध्य मक वद्यालयों का चयन और 4 सीबीएससी बोर्ड के स्कूलों से 150 वद्या र्थयों का चयन कया गया है।

उत्तरप्रदेश शक्षा परिषद	
यूपी बोर्ड से संचा लत स्कूल कुल-04	वद्या र्थयों की संख्या-70
सीबीएससी बोर्ड से संचा लक स्कूल-04	वद्या र्थयों की संख्या-80
कुल स्कूल-08	वद्या र्थयों की संख्या-150

न्यादर्श चयन व ध

अध्ययन में स्तरित यादृच्छिक न्यादर्शन व ध द्वारा चयन कर उसमें अध्ययनरत् 150 वद्या र्थयों का चयनसाधारण यादृच्छिक व ध से कया गया है।

शोध उपकरण-

प्रस्तुत अध्ययन में डॉ टी.आर.शर्मा के द्वारा नि र्मत एकेड मक अचीवमेंट मोटीवेशन टेस्ट का प्रयोग कया गया है। उक्त मापनी में कुल 38 प्रश्न है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यकीय व ध

प्रस्तुत अध्यय नें प्राथ मक ऑकड़ों के संकलन के बाद माध्य,मध्यमान और टी-मूल्य निकालकर परिकल्पनाओं की पुष्टि की गयी है।

परिणाम और वश्लेषण

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 9, September 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परिकल्पना क्रमांक-01 -यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत वद्या र्थियों की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा मेंकोई सार्थक अन्तर नहीं है।

ता लका क्रमांक-01

यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत वद्या र्थियों की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणासम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक वचलन, तथा टी-अनुपात

बोर्ड	वद्या र्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक वचलन	t-मान	सार्थकता स्तर
यूपी बोर्ड	70	24.22	4.74	1.34	0.05 स्तर पर सार्थक
सीबीएससी बोर्ड	80	25.32	4.38		

वश्लेषण

उपरोक्त ता लका का अध्ययन करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है क यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत वद्या र्थियों की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणासम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्यमानों के अंतर का टी-अनुपात का मूल्य 1.34 है, जो क सार्थक स्तर 0.05 तथा मुक्तांश 148 के सारणी मान 1.98 से कम है। इसका अर्थ है क मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतःपरिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अर्थात् यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत वद्या र्थियों की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा मेंसार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना क्रमांक-02-यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा मेंकोई सार्थक अन्तर नहीं है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 9, September 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ता लका क्रमांक-02

यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणासम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक वचलन, तथा टी-अनुपात

बोर्ड	वद्या र्थयों की संख्या	मध्यमान	मानक वचलन	t-मान	सार्थकता स्तर
यूपी बोर्ड	35	23.49	4.59	3.16	0.05 स्तर पर सार्थक
सीबीएससी बोर्ड	40	26.77	4.43		

वश्लेषण

उपरोक्त ता लका का अध्ययन करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है क यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणासम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्यमानों के अंतर का टी-अनुपात का मूल्य 3.16 है, जो क सार्थक स्तर 0.05 तथा मुक्तांश 73 के सारणी मान 2.00 से अ धक है। इसका अर्थ है क मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। अर्थात् यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा में सार्थक अन्तर होता है। यानि सीबीएससी बोर्ड के छात्रों की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा, यूपी बोर्ड के वद्या र्थयों की तुलना में अ धक होती है।

परिकल्पना क्रमांक-3-यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा मेंकोई सार्थक अन्तर नहीं है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 9, September 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ता लका क्रमांक-03

यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणासम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक वचलन, तथा टी-अनुपात

बोर्ड	वद्या र्थयों की संख्या	मध्यमान	मानक वचलन	t-मान	सार्थकता स्तर
यूपी बोर्ड	35	25.49	5.40	1.18	0.05 स्तर पर सार्थक
सीबीएससी बोर्ड	40	24.14	3.72		

वश्लेषण

उपरोक्त ता लका का अध्ययन करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है क यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणासम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्यमानों के अंतर का टी-अनुपात का मूल्य 1.18 है, जो क सार्थक स्तर 0.05 तथा मुक्तांश 73 के सारणी मान 2.00 से कम है। इसका अर्थ है क मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अर्थात् यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा मेंसार्थक अन्तर नहीं होता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के दौरान जो निष्कर्ष प्राप्त हुये, वे इस प्रकार से है।

1-यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत वद्या र्थयों की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा मेंसार्थक अन्तर नहीं है।

2-यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा मेंसार्थक अन्तर होता है। यानि सीबीएससी बोर्ड के छात्रों की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा, यूपी बोर्ड के वद्या र्थयों की तुलना में अ धक होती है।

3-यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा मेंसार्थक अन्तर नहीं होता है।

इस प्रकार से निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है क यूपी बोर्ड और सीबीएससी बोर्ड में माध्य मक स्तर पर अध्ययनरत कुल वद्या र्थयों और छात्राओं की शै क्षक उपलब्धि अ भप्रेरणा मेंसार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1-उठवाल, राहुल (2017). एक शक्षक की प्रेरणा , उत्प्रेरक के रूप में चुनौतियाँ एवं समाधान,इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ हिन्दी रिसर्च, वॉल्यूम-3, इश्शू-5, पृ. 06-08

2-चौहान एवं खान (2010). इम्पैक्ट ऑफ पैरेन्टल सर्पोट ऑन द एकेड मक परफार्मेन्स एण्डसेल्फ-कन्सेप्ट ऑफ द स्टूडेन्ट , जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड रिफलेक्शन इन एजुकेशन , वॉल्यूम-4, नं. 1,पृ. 14-26

3- संह एवं बघेल (2017). कशोरावस्था के वद्या र्थयों में शै क्षक उपलब्धि पर अ भभावक अ भप्रेरणा कापड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन , इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टी डस्पिलनरी एजुकेशन एण्ड रिसर्च,वॉल्यूम-2, इश्शू-5, पृ. 79-83।

4-श्री, वद्या प्रतिभा , सी.एस. (2006) - "रोल ऑफ पेरेन्ट्स इन हेल्पिंग एडोलसेंट्स वदस्ट्रेस", एक्सपेरिमेन्ट इन एजूकेशन, पेज 465

5-पंवार, एस. एवं उनियाल , एन.पी. (2008) - "उच्च प्राथ मक स्तर के बालक-बा लकाओं केसमायोजन एवं माता- पता का उनके प्रति व्यवहार का एक तुलनात्मक अध्ययन" प्राथ मक शक्षक, राष्ट्रीय शै क्षक अनुसंधान और प्र शक्षण परिषद् , वर्ष 33 , अंक-4, जनवरी, 2008

6- संह, अरुण कुमार (2010) शक्षा मनो वमान , भारती भवन पब्लिशर्स एंड डस्ट्रीब्यूटर्स पटनापृष्ठ संख्या - 231

7-भटनागर, आर.पी. (2003), शक्षा अनुसंधान, आगरा।

8-दुबे, एस.के. (2010) , शै क्षक अनुसंधान की व धयाँ समंक एवं शै क्षक सांख्यिकी , आगरा,राधा प्रकाशन मन्दिर।

9-गुप्ता, एस०पी० (2013) ,भारतीय शक्षा का इतिहास वकास एवं समस्याएँ शारदा पुस्तकभवन, संशो धत संस्करण।